जातिकेँ खुऔल जाए आन गामक दोस्त कुटुम-दिआद तँ रहबे करता।

(1)ऐ प्रकारे उपन्यासक मादे उपन्यासकार हमरालोकनिक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक नीक आ अधला प्रथा-रीति-चलनि-मान्यताक बीच विभिन्न प्रकारक लोक सबहक अमुल्य विचार आ ओही समाजक दालि-भातमे मुसलचन्दक उदाहरण दऽ ओकरासँ सावधान केलनि। सृष्टिक जे चक्र छी जीवन-मरण जइसँ कियो बँचि नै सकै छी जेकरा समाज आ कर्त्तकेँ मनोनुकूल कऽ समाजमे रचनात्मक काज करी ऐ लेल एकटा दिशा-निर्देश देलनि। जेकरा देवनन्दन जी अपने शब्दे स्वीकार कऽ पिताक निम्मिते साले-साल भोजे नै वल्कि यथासाध्य कल्याणकारी काजक प्रेरणा देलनि।



डॉ.अरुण कुमार सिंह

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता

'सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाक्-भवेत्।'

उपनिषदक ई सूत्र वाक्य समरसतेक उन्नायक व परिचायक अछि।

मानवमात्रक हितक कामना, सुख, समृद्धि एवं कल्याणक भावने सामाजिक समरसता अछि जे विभिन्न जाति, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय, भाषाई लोकक मन वाणी आओर कर्मसँ समरूप भए अपन प्रस्थिति एवं भूमिकाक निर्वाह करैत लक्ष्य प्राप्ति दिस प्रेरित करैछ। सामाजिक समरसता भारतीय संस्कृतिक आत्मा अछि। धर्म सापेक्षीकरण धर्म निरपेक्षीकरण, सर्वधर्म समभाव, मानवतावाद, बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय आदि अवधारणा सामाजिक समरसताक पोषक व परिणाम रहल अछि। विविधतामे एकरूपताक भावना समरसतेकँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। संत, साहित्यकार, समाजवैज्ञानिक आदि सब सामाजिक व्यवस्था एवं प्रगति लेल - सामाजिक संगठनक स्थिरता लेल सामाजिक समरसताक अपेक्षा करैत रहल अछि।

सामाजिक समरूपताक प्रचार-प्रसारक प्रति साहित्यकार सदैव सजग रहलाह अछि। सामाजिक प्राणीक रूपमे ओ समाजक शिल्पीए टा नहि अपितु शिक्षक, पथ-प्रदर्शक, विश्लेषक व सर्जक सेहो अछि एतदर्थ हुनक सृजनमे सामाजिक समरसताक सन्देश रहब स्वाभाविके अछि।

मिथिलेत्तर प्रान्त मध्य विद्यापतिक सम्मान आओर आधुनिक युगक प्रथम मैथिली गद्यकार चन्दाझाक यश देखिकेँ मिथिलाक विद्वानमे सेहो अपन निज भाषाक सेवाक उत्सुकता जागल जकर फलस्वरूप मैथिली कथासाहित्यक निर्माण प्रारम्भ भेल। मैथिली साहित्यक समालोचक डॉ. रामदेव झाक कहब छन्हि जे आरम्भमे मैथिली कथा लेखकक लेल रचनाक दुई आदर्श छल पहिल संस्कृत परम्पराक आख्यायिका-उपाख्यायन, नीति कथा आदि तथा दोसर पाश्चात्य परिपाटीक सामाजिक परिवेश पर रचित कथा उपन्यास। ओहि समय धरि अंग्रेजी वा अन्य पाश्चात्य साहित्यसँ मैथिली साहित्यकारक साक्षात् परिचय नहि भए सकल छल, परंच बंगला साहित्य मे पाश्चात्य कथा - उपन्यासक अनुवाद आओर ओहिसँ प्रेरित-प्रभावित अभिनव कथा-उपन्यास विशेष समृद्ध भए बंगाल आओर बंगालसँ बाहर लोकप्रिय भए चुकल छल। मिथिला आओर मैथिलीक पूर्वोत्तर राज्य-आसाम एवं बंगालसँ प्राचीन कालहिसँ घनिष्ट सम्बन्ध रहल अछि, जाहिक कारणेँ मैथिली कथा साहित्यक आरम्भिक कथामे बंगला साहित्यक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। हम कहि सकैत छी जे एकरे फलस्वरूप मैथिली कथा साहित्य मे नव युगक संग-संग नव दृष्टिकोणक सूत्रपात भेल एवं पाश्चात्य

साहित्य एवं भारतीय साहित्यसँ प्रभावित भए मैथिली कथासाहित्य क्रियाशील भेल अछि।

मैथिली साहित्य मध्य 1922-23 ई. क आसपास जखन मौलिक कथा लिखल जाए लागल ताहि मध्य कुमार गंगानन्द सिंह, कालीकुमार दास, लक्ष्मीपति सिंह, कांची नाथ झा 'किरण' आदिक कथा मध्य मिथिलाक वर्त्तमान समाजक स्थितिकेँ देखैत मैथिली कथासाहित्यकेँ सामाजिक जीवनसँ जोड़बाक भरपुर प्रयास कएलन्हि। एहि मे कुमार गंगानन्द सिंहक 'पंचपरमेश्वर' एवं 'बिहाड़ि' मे सामाजिक समरसताक वातावरणक अक्षरशः पालन होइत देखल गेल छल।

स्वातन्त्र्योत्तर युगमे मैथिली साहित्यकार लोकनि अपन साहित्य मध्य पात्र चयन करबामे क्रमशः आभिजात्य मोहक तिरस्कार करैत सामाजिक समरसताक नियोजन (समावेश) करैत गामघरक ओहि पात्रसभकेँ साहित्यमे प्रतिष्ठित कएलनि जे परम्परासँ शोषित ओ प्रताड़ित रहल छलाह।

स्वातन्त्र्योत्तर कालक कथाकारमे ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, रामदेव झा, हंसराज एवं लिली रे आदि प्रमुख अछि। मैथिली कथा साहित्य मध्य सामाजिक समरसताक दिशामे वस्तुतः ललितेक 'रमजानी' ओहि समयक श्रेष्ठ कथा सिद्ध भेल जे अखन धरि टटका बनल अछि। हिनक ओवरलोड, कंचनियाँ, मुक्ति एवं जान्वर आदि कथा मे समकालीन स्थितिकेँ चिन्हैत जीवनक यथार्थक चित्रणक क्रममे समाजक सामन्ती विकारकेँ जगजियार करैत सामाजिक समरसताक बोध तँ देलनि मुदा मुक्तिक रास्ता नहि बना सकलाह। धीरेन्द्रक अधिकांश कथाक जन्म समाजक ओहि क्षेत्रक व्यथासँ होइत अछि जे सामाजिक स्तर पर तिरस्कृत अछि। शारीरिक स्तर पर बात-बात पर दण्डित कएल जाइत अछि। आर्थिक स्तर पर औँठा बोरबा लेल अभिशप्त अछि। हिनक कथा घंटी, सवाइ, हिचुकैत बहैत सेती, गामक ठठरी, मादा काँकोड़, बन्हकी आदि कथामे सामाजिक समरसता देखार दैत अछि। रामदेव झाक मनुक संतान, एक खीरातीन फाँक आदि कथामे स्वतन्त्र भारतक आर्थिक संघर्षक सामाजिक भावनासँ जाति विभेदकेँ समाप्त करैत वर्ग-संघर्षसँ मुक्त भए जाइत अछि। सामाजिक एवं प्रशासकीय व्यवस्थाक विद्रूपताकेँ देखार करैत दलित वर्गक विद्रोहक स्वरकेँ संगठन मे परिवर्त्तन करैत तत्कालीन समकालीन जीवनक यथार्थक चित्रण करैत अछि। सोमदेव विशिष्ट कथाकार छथि। हिनक

प्रमुख कथा भात, अंगाचोर आदि मे निम्न वर्गक जीवनक यथार्थक अत्यन्त आत्मीयतासँ चित्रण भेल अछि। प्रभाष कुमार चौधरीक 'मलाहक टोल' कथा शोषित वर्गकेँ अपन अस्तित्वक रक्षा लेल प्रेरित करैत अछि। रामानन्द रेणु आर्थिक विसंगति जन्य निम्न वर्गक दंश एवं कुण्ठाकेँ अपन कथा मध्य विश्लेषित कएने छथि। जीवकान्तक 'इनकिलाव' तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक जीवनक यथार्थसँ अछि।

1970 ई. क दशकमे बैंकक राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्सक समाप्ति, भूमि सुधार सम्बन्धी आन्दोलन, आदि किछु एहन घटना थिक, जाहिसँ सामाजिक जागरण भेल तँ दोसर दिस साम्यवादी आन्दोलनसँ पूँजीपति एवं श्रमिक मध्य संघर्षमे वृद्धि भेल। दलित वर्गमे सह-अस्मिताक भावमे वृद्धि भेल। एहि यथार्थक प्रवक्ता कथाकारक रूपमे सुभाषचन्द्र यादवक नाम महत्त्वपूर्ण अछि। हिनक महत्वपूर्ण कथा छन्हि- घरदेखिया, काठक बनल लोक, फँसरी एवं 'बनैत बिगड़ैत' कथा संग्रहक कथा आदि। कथाकार दलित अस्मिताक स्वर दैत समकालीन यथार्थक चित्रणसँ पूर्ण सफल भेल छथि। कथाकार महाप्रकाश, सुकान्त सोम, मनमोहन झा, उपेन्द्र दोषी, उदयचन्द्र झा 'विनोद', रामनरेश सिंह, राजाराम प्रसाद, महेन्द्र, विभूति आनन्द, अशोक, रमेश, तारानन्द वियोगी, देवशंकर नवीन, प्रदीप बिहारी, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', रमेश रंजन, शैलेन्द्र आनन्द, केदार कानन, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश पासवान, डॉ. धीरेन्द्र, उमाकान्त, सुशील, रघुनाथ मुखिया, कामिनी कामायनी, ऋषि वशिष्ट, उमेश मंडल, वीरेन्द्र कुमार यादव, रामदेव प्रसाद मंडल झारूदार, मनोज कुमार मंडल, दुर्गानन्द मंडल आदि अपन कथा मध्य तथाकथित रूपेँ शोषित-दलित निम्नवर्गक छोटसँ छोट घटनाक्रमकेँ अपन कथानक बनबैत समाजक वास्तविक चित्रक चित्रण कए रहल छथि। एवं प्रकारेँ मैथिली कथा अपन स्वरकेँ परिवर्त्तित करैत, नव डेग दैत सामाजिक समरसता कायम करबा दिस विकासोन्मुख अछि।

सहायक ग्रंथसूची

1 झा, बासुकीनाथ (डॉ.) (सम्पादक), समकालीन कथा साहित्यःसामाजिक परिप्रेक्ष्य, चेतना समिति, पटना,1976

2 झा, दिनेश कुमार(डॉ.), मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास,मैथिली

अकादमी, पटना, 1989

3 झा, श्री दुर्गानाथ 'श्रीश' (डॉ.), मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991

4 भारद्वाज, मोहन (सम्पादक), मैथिली आलोचना,पत्रिका, मित्र गोष्ठी द्वारा डॉ. भीमनाथ झा, लक्ष्मीसागर, दरभंगा, फरबरी 1992

5 झा, रामानन्द 'रमण'(डॉ.), अखियासल, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी,1995

6 नबीन,देवशंकर, आधुनिक साहित्यक परिदृश्य, अंतिका प्रकाशन, दिल्ली 2000

7 ठाकुर, प्रो. वीणा, वाणिनी, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, 2010

8 झा, रामानन्द 'रमण'(डॉ.), हिआओल, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी,2012

9 झा बाल गोविन्द ''व्यथित'' (डॉ.) मैथिली साहित्यक इतिहास, पटना भारती भवन, 1981

10 झा, बासुकीनाथ (डॉ.) (सम्पादक) मैथिली साहित्यक रूपरेखा, पटना चेतना समिति, 1976

11. http://www.videha.co.in

****

मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा

किछु समयसँ देशमे उच्चशिक्षाक माध्यम एवं विषयवस्तुकेँ लए कए विमर्श चलि रहल अछि। एक दिस बाबा रामदेव अनशनक समय अपन मांग मे भारतीय भाषाक माध्यमसँ उच्च शिक्षाक मांग रखलन्हि, तँ दोसर दिस मुंबई उच्च न्यायालयक एक गोट फैसलामे कहल गेल अछि जे लोक सेवा आयोगक अंतिम